उच्च शिक्षा में मुस्लिम महिलाओं की स्थिति

(विशेष संदर्भ:पटना शहर)

(Status of Muslim Women in Higher Education)

Special Reference in Patna

एम. फिल. स्त्री अध्ययन उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु शोध-प्रबंध

सत्र: 2015-16

शोध निर्देशिका

डॉ.अवंतिका शुक्ला

सहायक प्रोफेसर

शोधार्थी

अफजल हुसैन

नामांकन संख्या : 2015/03/212/011

स्त्री अध्ययन विभाग

संस्कृति विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

पोस्ट- मानस मंदिर, गांधी हिल्स वर्धा- 442001 (महाराष्ट्र), भारत

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

अनुक्रमणिका

		प्रष्ठ क्र.
		9-23
	शोध प्रश्न	
	अध्ययन का उद्देश्य	
	अध्ययन का महत्व	
	शोध प्रविधि	
	अध्ययन क्षेत्र	
	पाठ्य विभाजन	
	शोध की सीमाए	
अध्याय-1	**मुस्लिम महिला शिक्षा को लेकर चलने वाली बहसें**	**25- 61**
	1.1 पारंपरिक दृष्टिकोण	
	i. उन्नीसवीं सदी	
	ii. बीसवीं सदी	
	iii. इक्कीसवीं सदी	
	1.2 आधुनिक दृष्टिको	
अध्याय-2	**उच्च शिक्षा में मुस्लिम महिलाओं की सहभागिता**	**63-78**
	2.1 पटना के शिक्षण संस्थानों में मुस्लिम महिलाओं की स्थिति	
	2.2 उच्च शिक्षा में सरकारी एवं गैर-सरकारी योजनाओं की	
अध्याय-3.	**उच्च शिक्षित मुस्लिम महिलाओं का वैयक्तिक अध्ययन**	**80-97**
	3.1 उच्च शिक्षा में अध्ययनरत मुस्लिम महिलाएँ	
	3.2 उच्च पदों पर कार्यरत मुस्लिम महिलाए	
अध्याय -4.	**उच्च शिक्षा में मुस्लिम महिलाओं की चुनौतियां और संघर्ष**	**99-115**
	4.1 धार्मिक कट्टरता (इस्लामिक फतवे)	
	4.2 सामाजिक परिवेश	
	4.3 सांप्रदायिक परिवेश	
	4.4 आर्थिक स्थिति	

निष्कर्ष एवं सुझाव **117-120**
संदर्भ ग्रंथ सूची
परिशिष्ट

शोध की रूपरेखा

परिचय

महिलाएं चाहे जिस वर्ग, जाति, वर्ण, समाज या समुदाय की हों सबसे ज्यादा उपेक्षित, दमित, शोसित और पीड़ित होती हैं। इनके उत्थान के लिए कई समाजशास्त्री तथा शिक्षा शास्त्रियों ने आवाज़े बुलंद की हैं। चाहे वो लाला लाजपत राय हों, सर सैयद अहमद खान, महात्मा गांधी हों या भीम राव अंबेडकर। भीम राव अंबेडकर ने महिलाओं के लिए आरक्षण की वकालत की थी। महात्मा गांधी ने देश के विकास के लिए नारी उत्थान को आवश्यक बताया है। फिर भी इनकी स्थिति दोयम दर्जे की ही रही। चाहे वह किसी भी संप्रदाय या धर्म की ही क्यों न हो यदि हम भारत के अल्पसंख्यक समुदाओं के मुस्लिम वर्ग की बात करे तो इस समुदाय के औरतों की स्थिति अन्य सभी समुदायों की तुलना में सबसे बदतर स्थिति में हैं। आखिर इस बदहाली के पीछे की मूल कारणों में जो सबसे बड़ा कारण है वो अशिक्षा है। बायड एच. बोड के कथानानुसार- "समाज और शिक्षा का एक दूसरे से पारस्परिक कारण और परिणाम का संबंध है। किसी भी समाज का स्वरूप उसकी शिक्षा व्यवस्था के स्वरूप को निर्धारित करती है और इस व्यवस्था का स्वरूप समाज के स्वरूप को निर्धारित करती है।" इस कथन से स्पष्ट होता है, कि शिक्षा और समाज दोनों अविछिन्न रूप से परस्पर गुथे हुए हैं। (पाठक, 2012, पृ. 01) शिक्षा ही एक मात्र ऐसा साधन है, जिसके अभाव में कोई भी वर्ग या समुदाय, अभाव के काल कोठरी में चला जाता है और उसके पतन का कारण बनता है। इस तरह अंधेरी सुरंग में रास्ता तलाश करता रह जाता है।

यदि हम इस्लाम का सैद्धांतिक पक्ष देखें तो ऐसा माना जाता है कि मुस्लिम संप्रदाय आरंभ काल से ही शिक्षा का हिमायती रहा है। विशेषकर महिला शिक्षा का 'पैगंबर हजरत मुहम्मद' के कथानुसार तुमने अगर एक मर्द को पढ़ाया तो मात्र एक व्यक्ति को पढ़ाया, लेकिन अगर एक औरत को पढ़ाया तो एक खानदान या नस्ल को पढ़ाया। चौदह सौ साल पहले जब दौर-ए-जहालिया (अज्ञानता का युग) का दौर था। उस समय आदमी नहीं पढ़ते थे। तो उस काल में भी इस्लाम में कई सारी महिलाएं शिक्षा की शिखर पर थी , जैसे- हजरत आएशा, हजरत साफिया , सायदा, नाफिसा आदि महिलाएं थी। हजरत आएशा को स्कालर आफ द स्कालर कहा जाता था क्योंकि वो कई सारे विद्वतजनों को ज्ञान दिया करती थी। अचानक से ऐसी कौन-सी परिस्थितियाँ आ गई कि ये महिलाएं शिक्षा के क्षेत्रो में पिछड़ती चली गई।

19वीं सदी के संदर्भ में अगर शिक्षा व्यवस्थाओं को हम देखते हैं तो उस समय की शिक्षा व्यवस्था धार्मिक परम्पराओं पर आधारित थी। लेकिन ब्रिटिश कालीन भारत में तकनीकी व आधुनिक शिक्षा का प्रचलन आरंभ हो चुका था। भारत कि परंपरागत शिक्षा व्यवस्था हिंदू समाज और समुदाय के बच्चों के लिए आधारित थी, जो मुख्यतः अपने धर्म के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था को संचालित करता था। इसके अंतर्गत बच्चों की शिक्षा के लिए संस्कृत पाठशालाओं या विद्यालयों द्वारा धार्मिक व संस्कृत भाषा की शिक्षा देने और प्राप्त करने का प्रावधान था। इसी प्रकार की शिक्षा व्यवस्था मुस्लिम समाज में प्रचलित थी, जो धार्मिक शिक्षा (दीनी-तालीम) व्यवस्था पर आधारित थी और यह मुस्लिम वर्ग के बच्चो के लिए होता था। इस तरह की शिक्षा मुहैया कराने का काम मदरसा, मकतब व मस्जिदों के जिम्में होता था । इन दोनों व्यवस्थाओं में स्त्रियों की भागीदारी नगण्य थी। स्त्रियों को सिर्फ प्रारंभिक शिक्षा दी जाती थी और वो भी घर पर रह कर ही शिक्षा ग्रहण किया करती थी। ब्रिटिश सरकार ने जब शिक्षा व्यवस्था का आधुनिक प्रस्ताव रखा तो दोनों समुदाय के लोग इससे आहत हुए और पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था को बचाने के लिए ब्रिटिश सरकार का विरोध करने लगे। लेकिन धीरे-धीरे हिंदू वर्ग के लोगों ने पश्चिमी शिक्षा के महत्व को समझा और इसे अपनाने लगे। मगर मुस्लिम वर्ग के लोग इस पद्धति की आलोचना अंत तक करते रहे।

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध तथा 20वीं सदी के प्रारंभ में आधुनिक व पश्चिमी शिक्षा काफी लोकप्रिय हो चुकी थी। सुधारवादी मुस्लिम माध्यम वर्ग सहित संभ्रांत भारतीय इस विकसित नवीन शिक्षा पद्धति के इर्द गिर्द जुटने लगे थे। हालांकि सुधारवादियों ने आधुनिक शिक्षा व्यवस्था को तो स्वीकार किया किंतु भारत में नारी शिक्षा के विरोधी बने रहे। आधुनिक शिक्षा को वे पुरुषों के लिए तो अत्यंत महत्वपूर्ण मानते थे। परंतु उनकी राय में वही शिक्षा महिलाओं के लिए खतरनाक थी। प्रख्यात मुस्लिम शिक्षाविद सर सैय्यदअहमद खान ने स्पष्ट रूप से इसकी घोषणा की, कि चूंकि अशिक्षित महिला अपने अधिकारों के प्रति सचेत नहीं होती और अपने जीवन से संतुष्ट रहती है इसलिए नारी शिक्षा के विरोधी थे। वो यह समझते थे की अगर वे आधुनिक शिक्षा पद्धति ग्रहण करेंगी तो अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो जाएंगी, जिससे उनका जीवन नर्क हो जाएगा। यहां तक की सर सैय्यद अहमद खान ने महिला शिक्षा संस्थाओं की स्थापना का भी विरोध किया तथा उन्होंने लड़कियों को केवल धार्मिक पुस्तकों तक केंद्रित रखने पर ज़ोर दिया।

इसी प्रकार मौलाना अशरफ आली थानवी ने भी स्त्री शिक्षा के कट्टर विरोधी थे। यहां तक कि वे संस्थान विशुद्ध रूप से लड़कियों के लिए ही क्यों न बने हो उनका कहना था कि ऐसे संस्थानों में विभिन्न क़ौमों,

वर्गों, विचारों व पृष्ठभूमियों की लड़कियाँ एकट्ठा होंगी और उनके अंतमिश्रण, मेंल-जोल का उनके विचारों तथा नैतिकता पर हानिकारक प्रभाव पड़ेगा। यहां तक कि वे महिलाओं को लेखन-कला सिखाने के भी विरोधी थे। उनके अनुसार केवल संकोची माहिलाओं को ही लेखन विधा सिखाई जानी चाहिए। यदि बच्चियाँ पढ़ने के साथ-साथ लिखना भी सीख गई तो सावधानी बरतनी चाहिए कि केवल साधारण पत्र व घर का हिसाब-किताब ही लिखने योग्य हो, यहां तक कि उन्हे समाचार-पत्रों को भी पढ़ने तक कि इजाज़त नहीं देते थे। क्योंकि वे इसे समय कि बरबादी मानते थे। उन्हें अशिक्षित, अनभिज्ञ व पिछड़ा रखकर वह क्षयिष्णु समाज को थामना तथा सम्भ्रांत मूल्यों को संरक्षित रखना चाहते थे। (अली, 2002, पृ.121-129) दुसरी तरफ स्त्री शिक्षा की हिमायती के तौर पर हम डिप्टी नाज़िर अहमद, और सैय्यद अहमद देहल्वी को देखते हैं, जो स्त्रियों के शिक्षा के पैरवीकार थे। डिप्टी नजीर अहमद ने अपनी उपन्यास मिरतुल-उरुस में दो बहनों की शिक्षा और अशिक्षा के प्रति मानसिक संकीर्णता को दिखाया है। वहीं सैय्यद अहमद देहल्वी ने 'हुकुके निस्वां' दस रोज़ा अखबार के माध्यम से मुस्लिम महिलाओं के अधिकार को उजागर किया था।

इसके साथ-साथ उस समय मुस्लिम स्त्री शिक्षा के लिए कई सारी महिलाओं ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया, जिसमें प्रमुख रूप से रुकय्या हुसैन शेखावत, मुहम्मदी बेगम, वहीदा जहाँ, रशीद जहाँ प्रमुख महिलायें, महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। इसके अतिरिक्त हैदराबाद की प्रथम मुस्लिम सामाजिक महिला जिन्होंने 'Association of Muslim women' संगठन बना कर महिलाओं को आत्म निर्भर बनाने के उद्देश्य से हस्तकला का प्रशिक्षण देने लगी। महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में भोपाल की बेगम का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा जिन्होंने स्त्री शिक्षा के लिए सरहनीय काम किया। इसके अलावा इन्होंने All India women's conference में हिजाब के विरूद्ध आवाज़ें भी उठाईं और कहा की ये पर्दा या हिजाब उनके मज़हब का अंग नहीं बल्कि औरतों पर पुरुषों द्वारा लगाया गया सामाजिक प्रतिबंध है। इस प्रकार उस सदी में ऐसी कई सारी महिलाओं ने अपने आधिकारों के प्रति आवाज़ें उठाईं।

वर्तमान के संदर्भ में अगर मुस्लिम महिलाओं की स्थिति को देखें तो पहली मुस्लिम महिला नयायधिश बी॰ फातिमा,राजनेता मोहसीना किदवई, नजमा हेपतुल्लाह, समाज सेविका अभिनेत्री शबाना आज़मी, सौन्दर्य की महारथी शहनाज़ हुसैन, नाट्य कर्मी नादिरा बब्बर, पूर्व महिला हॉकी कप्तान रज़िया जैदी, टेनिस सितारा सानिया मिर्ज़ा, गायन में मुकाम रखने वाली बेगम अख्तर, परवीन, साहित्य अदब में नासिर शर्मा, महरून निसा परवेज़, इस्मत चुगताई, कुरर्तुल एन हैदर तो पत्रकारिता में सादिया देल्हवी और सीमा

मुस्तफा जैसे कुछ नाम लिए जा सकते हैं,जो इस बात का साक्ष्य हो ही सकती हैं की यदि इन महिलाओं को भी उचित अवसर मिले तो वो भी देश, समाज की तरक़्क़ी में उचित भागीदारी निभा सकती हैं।

सच तो यह है की फातिमा बी., सानिया मिर्ज़ा या मोहसिना जैसी महिलाओं का प्रतिशत बमुश्किल एक भी नहीं हैं। ऐसी अनगिनत शहबानों, अमीना और कनीज़ जैसी महिलायें अपने वजूद के लिए रास्ता तलाश कर रहीं हैं। भारत में महिलाओं के साक्षरता दर की बात करें तो महिलाओं का साक्षरता दर 40 प्रतिशत है। इसमें मुस्लिम महिलायें मात्र 11 प्रतिशत हैं। हाई स्कूल तक शिक्षा प्राप्त करने वाली महिलाओं का प्रतिशत मात्र 2 प्रतिशत है और स्नातक का प्रतिशत 0.8 प्रतिशत है। मुस्लिम महिलाओं द्वारा संचालित स्कूलों में प्राथमिक स्तर पर मुस्लिम लड़कों का अनुपात 56.5 प्रतिशत है, जिसमें छात्रों का अनुपात 52.3 प्रतिशत तो छात्राओं का 30 प्रतिशत है। उच्च शिक्षा में इनकी भागीदारी हमें न के बराबर क्यों मिलती है आखिर ये कहाँ पिछड़ रही हैं क्यों की उच्च शिक्षा तक पहुँचते-पहुँचते इनकी संख्या कम क्यों हो जाती है? इन प्रश्नों का उत्तर मुझे शोध के माध्यमों से ढूँढना हैं। (स्टार न्यूज़, 16 दिसम्बर, 2009)

शोध प्रश्न

शोध प्रश्न के रूप में जिन प्रश्नों का मैंने चुनाव किया वो निम्नलिखित इस प्रकार है-

1. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में उच्च शिक्षा के क्षेत्रों में मुस्लिम महिलाओं की स्थिति क्या थी? विशेष तौर पर उन्नीसवीं सदी से मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा को लेकर किस प्रकार की बहसें चलीं?
2. उच्च शिक्षा के क्षेत्रों में मुस्लिम महिलाओं के पिछड़ने के कारण क्या हैं तथा कौन-कौन सी चुनौतियाँ और संघर्ष उच्च शिक्षा ग्रहण करने में बाधा उत्पन्न करते है?
3. क्या सरकारी योजनाएँ मुस्लिम महिलाओं को उच्च शिक्षा देने हेतु प्रोत्साहित कर रहे हैं?